कुम्भलगढ़ दुर्ग का मानचित्र

1. हनुमान पोल
2. राम पोल
3. वेदी मंदिर
4. नीलकंठ महादेव मंदिर
5. गणेश मंदिर
6. कुम्भा महल
7. महाराणा प्रताप का जन्म स्थान
8. बादल महल
9. पितलिया देव मंदिर
10. मामादेव मंदिर
11. गोलेराव मंदिर समूह
12. बावन देवरी
13. जैन मंदिर

भ्रमण समय : प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्योस्त तक

प्रवेश शुल्क

भारतीय	:	5 रूपये
विदेशी	:	100 रूपये

(15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए निःशुल्क प्रवेश)

Printed by : TPPL, JPR # 9829011091

कुम्भलगढ़ दुर्ग

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
जयपुर मण्डल, जयपुर

कुम्भलगढ़ दुर्ग

उदयपुर से 80 कि.मी. उत्तर पश्चिम दिशा में राजसमन्द जिले में अरावली पर्वत श्रृंखला की ऊँची चोटी पर अवस्थित कुम्भलगढ़ दुर्ग अपने सामरिक महत्व के कारण राजस्थान के महत्वपूर्ण दुर्गों में से एक है। जनश्रुति के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण दूसरी शताब्दी ई. पू. के जैन मतावलम्बी संप्रति द्वारा निर्मित इमारत के अवशेषों के ऊपर महाराणा कुम्भा (1443-1458 ई.) ने अपने प्रसिद्ध शिल्पज्ञ मण्डन की देखरेख में करवाया था। मालवा और गुजरात के मुस्लिम शासकों ने इस दुर्ग को जीतने का प्रयास किया, किन्तु दुर्ग की मजबूत किलेबन्दी एवं सामरिक स्थिति के कारण सफल नहीं हो पाये। दुर्ग में सबसे ऊँचाई पर स्थित प्रसिद्ध बादल महल का निर्माण राणा फतेह सिंह (1885-1930 ई.) ने करवाया था। किले की परिधि में अवस्थित अन्य महत्वपूर्ण निर्माणों में प्रवेश द्वार, कुम्भा महल, बादल महल, हिन्दू एवं जैन मंदिर, जलाशय एवं बावड़ी, छतरी आदि प्रमुख है।

प्रवेश द्वार : दुर्ग में प्रवेश करने के लिए आरेट पोल, हल्ला पोल, हनुमान पोल, राम पोल एवं विजय पोल द्वार के रूप में अवस्थित हैं। यद्यपि किले का मुख्य प्रवेश द्वार राम पोल है परन्तु हनुमान पोल का महत्व अधिक है, जहाँ महाराणा कुम्भा द्वारा माण्डव्यपुर से लाई गई हनुमान जी की मूर्ति स्थापित है। अन्य प्रवेश द्वारों में भैरव पोल, नींबू पोल एवं पागड़ा पोल है जो ऊपर बादल महल जाने के मार्ग में आते हैं। दुर्ग में पूर्व की ओर दानीवट्टा नामक प्रवेश द्वार है।

गणेश मंदिर : महाराणा कुम्भा के शासन काल में निर्मित यह मंदिर बादल महल की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित है। चित्तौड़गढ़ कीर्ति स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार राणा कुम्भा ने इस मंदिर में गणेश प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी।

वेदी मंदिर : इसका निर्माण राणा कुम्भा ने दुर्ग निर्माण पूर्ण होने पर यज्ञ कार्य हेतु 1457 ई. में करवाया था। ऊँची जगती पर बना यह दो मंजिला पश्चिमाभिमुख भवन अष्टकोणीय योजना पर निर्मित है। इसकी गुम्बदनुमा छत छत्तीस स्तम्भों पर टिकी है। परिसर में देवी को समर्पित तीन अन्य मंदिर भी है।

नीलकंठ महादेव मंदिर : वेदी मंदिर के पूर्व की ओर ऊँची जगती पर निर्मित इस शिव मंदिर का निर्माण 1458 ई. में महाराणा कुम्भा ने करवाया था। इसमें प्रवेश के लिए पश्चिम की ओर सोपान बने हैं। गर्भगृह के चारों ओर चौबीस स्तम्भों वाला खुला मण्डप है। पश्चिमी द्वार के बायीं ओर एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख से पता चलता है कि राणा सांगा ने इस मंदिर का पुनरूद्धार करवाया था।

पार्श्वनाथ मंदिर : इस मंदिर का निर्माण 1451 ई. में नरसिंह पोरवाड़ ने करवाया था। गर्भगृह में पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित है जिसके दोनों ओर लाल पत्थर से निर्मित मूर्तियाँ है।

बावन देवरी मंदिर : इस प्रसिद्ध जैन मंदिर का नाम एक ही परिसर में निर्मित बावन (52) मंदिरों के आधार पर पड़ा जिनका एक मात्र प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है। अपेक्षाकृत बड़े मंदिर में एक गर्भगृह, अन्तराल व खुला मण्डप है। गर्भगृह के ललाटबिम्ब पर जैन तीर्थंकर की प्रतिमा स्थापित है किन्तु छोटे मंदिर मूर्तिविहीन है।

पितलिया देव मंदिर : यह पूर्वाभिमुख जैन मंदिर किले के पश्चिमी भाग में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण पितलिया जैन सेठ ने 1455 ई. में करवाया था। भू-विन्यास की दृष्टि से यह गर्भगृह एवं बहुस्तम्भीय सभामण्डप युक्त है। गर्भगृह में चारों ओर से एवं सभामण्डप में तीन ओर से प्रवेश किया जा सकता है। बाह्य जंघा अप्सराओं एवं नर्तकियों के अतिरिक्त देवी-देवताओं की मूर्तियों से सुसज्जित है।

मामादेव मंदिर : इसे कुम्भास्वाम के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर की छत सपाट है एवं मण्डप स्तम्भयुक्त है। देवी देवताओं की अनेक आकर्षक मूर्तियां यहाँ से प्राप्त हुई हैं।

गोलेराव मंदिर समूह : यह बावन देवरी मंदिर से उत्तरपश्चिम की ओर एक ऊँची पहाड़ी पर निर्मित नौ मंदिरों का समूह है। मंदिर की बाह्य भित्ति पर ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव का उत्कीर्णन अत्यन्त कलात्मक है। मंदिर की स्थापत्य जन्य विशेषताएं इसे राणा कुम्भाकालीन निर्माण होने को इंगित करती है।

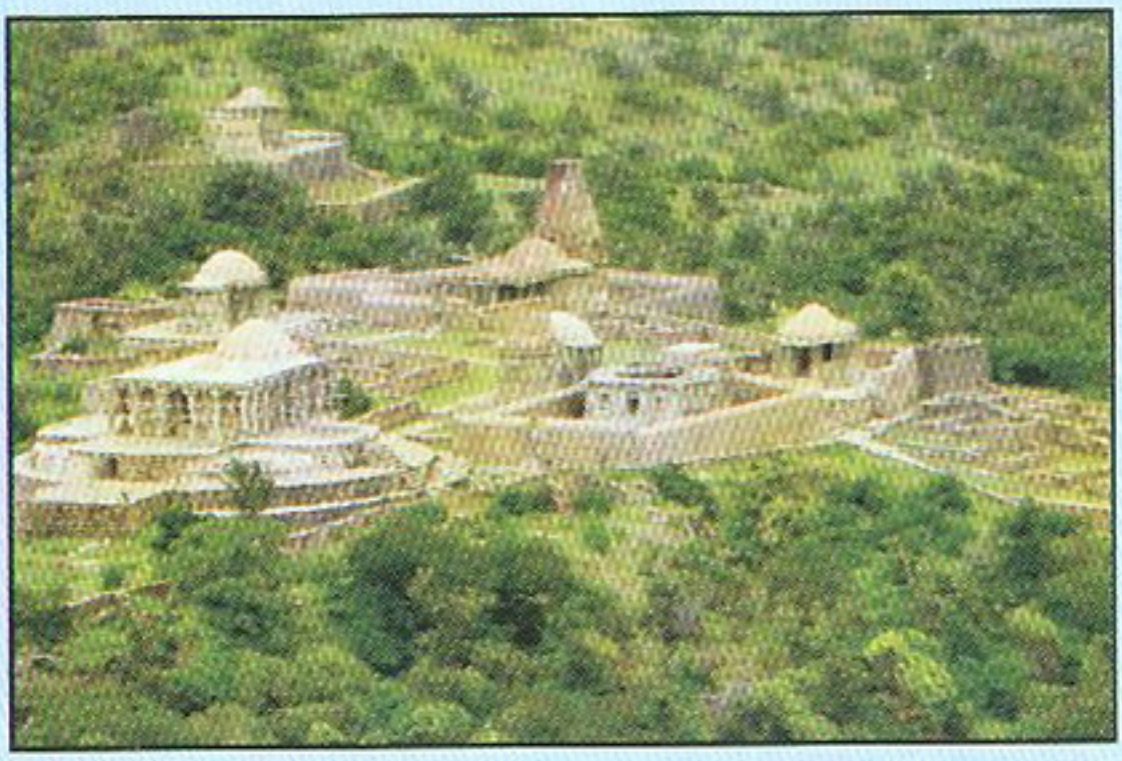

कुम्भा महल : पगड़ा पोल के पास स्थित यह महल दुमंजिला भवन है। महल में दो कक्ष, एक बरामदा व सामने की ओर खुला प्रांगण है। कक्ष में नक्काशीदार पत्थरों से निर्मित जालीदार खिड़कियाँ हैं।

महाराणा प्रताप का जन्म स्थान : पगड़ा पोल के पास स्थित झालिया -का-मालिया अथवा रानी झाली का महल महाराणा प्रताप का जन्म स्थान माना जाता है। यह भवन अनगढ़ पत्थरों से निर्मित हैं। इसकी दीवारें चित्रित थी जिसके अंश अभी भी देखें जा सकते हैं।

बादल महल : अनेक बड़े व छोटे कक्षों से युक्त जनाना व मर्दाना महल के नाम से दो भागों में विभक्त इस दुमंजिले भवन का निर्माण राणा फतेह सिंह (1885-1930 ई.) ने करवाया था। जनाना महल के बरामदे व खिड़कियां जालीयुक्त है ताकि महल की रानियां बिना दिखे वहां होने वाले कार्यक्रमों को देख सके। महल की दीवारें एवं छत चित्रकारी से अलंकृत हैं।